Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 33

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

20 अक्तूबर 2016 ई

18 मुहर्रम 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

जो व्यक्ति मुझे नहीं स्वीकार करता वह ख़ुदा तआला और रसूल के बयान को नहीं मानता क्योंकि मेरे बारे में कुरआन मजीद की भविष्य वाणी मौजूद है औरजो आदमी ख़ुदा और रसूल को नहीं मानता और कुरआन की तक़ज़ीब करता है और जानबूझकर ख़ुदा तआला के निशानों को अस्वीकार करता है और मुझे भी वाबजूद सैंकड़ों निशानों के झूठा ठहराता है तो वह मोमिन कैसे हो सकता है।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

प्रश्न (6): सम्माननीय हुज़ूर ने हज़ारों जगह लिखा है कि कलमा पढ़ने वाले और क़िबला वालों(मुसलमानों) को काफिर कहना किसी तरह उचित नहीं है इससे साफ ज़ाहिर है कि उन मोमिनों के अतिरिक्त जो आप को काफिर कह कर काफिर बन जाएं सिर्फ आप के न स्वीकार करने से कोई काफ़िर नहीं हो सकता। लेकिन अब्दुल हकीम खान को आप लिखते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति जिस को मेरा प्रचार पहुंचा और उसने मुझे स्वीकार नहीं किया वे मुसलमान नहीं है। इस बयान और पहली पुस्तकों के बयान में विपरीत अर्थ है। अर्थात पहले आप तरयाकुल कुलूब आदि में लिख चुके हैं कि मेरे न मानने से कोई काफिर नहीं होता और अब आप लिखते हैं कि मेरे मना करने से काफ़िर हो जाता है।

उत्तर: यह अजीब बात है कि आप काफिर कहने वाले और न मानने वाले दो प्रकार के मनुष्य मानते हैं हालांकि ख़ुदा के निकट एक ही किस्म है क्योंकि जो व्यक्ति मुझे नहीं मानता वह इसलिए नहीं मानता कि वह मुझे मुफ़्तरी करार देता है। मगर अल्लाह तआला फरमाता है कि ख़ुदा पर झूठ गढ़ने वाला सब काफिरों से बढ़कर काफिर है जैसा कि फरमाता है। فَمَنۡ اَظۡلَمُ مِمَّنِ افۡتَرٰی عَلَی اللّٰہِ کَذِبًا اَوۡ کَذَّبَ بِاٰیٰتِہٖ (यूनुस: 18) अर्थात बड़े काफ़िर दो ही हैं एक ख़ुदा पर झूठ गढ़ने वाला। 1 दूसरा ख़ुदा की वाणी का इंकार करने वाला। अत: जब मैंने एक इंकार करने वाले के निकट ख़ुदा पर झूठ गढ़ा है। इस मामले में मैं न केवल काफिर बल्कि बड़ा काफिर हुआ, और अगर मैं मुफ़्तरी नहीं तो निश्चय ही वह कुफ्र उस पर पड़ेगा जैसा कि अल्लाह तआला ने इस आयत में ख़ुद कहा है। इसके अतिरिक्त जो मुझे नहीं मानता वह ख़ुदा और रसूल को भी नहीं मानता क्योंकि मेरे बारे में ख़ुदा तआला और रसूल की भविष्यवाणी मौजूद है। अर्थात आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़बर दी थी कि अंतिम समय में मेरी उम्मत में से मसीह मौऊद आएगा और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी ख़बर दी थी कि मेराज की रात में मसीह मरियम को उन नबियों में देख आया हूँ जो कि इस दुनिया से गुज़र गए हैं और यहया शहीद के पास दूसरे आकाश में उन को देखा है और ख़ुदा तआला ने कुरआन शरीफ में ख़बर दी कि मसीह मरियम मर गया है और ख़ुदा तआला ने मेरी सच्चाई की गवाही के लिए तीन लाख से अधिक आसमानी चिन्ह प्रकट किए और आसमान पर कसूफ ख़सूफ रमज़ान में हुआ। अब जो व्यक्ति ख़ुदा तआला और रसूल के बयान को नहीं मानता और कुरआन की तक़ज़ीब करता है और जानबूझकर ख़ुदा तआला के निशानों को अस्वीकार करता है और मुझे भी वाबजूद सैंकड़ों निशानों के झूठा ठहराता है तो वह मोमिन कैसे हो सकता है और अगर वह मोमिन है तो मैं झूठ गढ़ने के कारण काफिर ठहरा क्योंकि उनकी नज़र में मुफ़्तरी हूँ और अल्लाह तआला कुरआन शरीफ में फरमाता है।

قَالَتِ الۡاَعۡرَابُ اٰمَنَّا ؕ قُلۡ لَّمۡ تُؤۡمِنُوۡا وَ لٰکِنۡ قُوۡلُوۡۤا اَسۡلَمۡنَا وَ لَمَّا یَدۡخُلِ الۡاِیۡمَانُ فِیۡ قُلُوۡبِکُمۡ (अल्हुजरात: 15) अर्थात अरब के ग्रामीण कहते हैं कि हम ईमान ले आए हैं। उनसे कह दो कि तुम ईमान नहीं लाए। हां यूं कहो कि हम ने आज्ञाकारिता धारण कर ली है और ईमान अभी तुम्हारे दिलों में प्रवेश नहीं हुआ। अत: जब ख़ुदा तआला पालन करने वालों का नाम मोमिन नहीं रखता। फिर वह ख़ुदा के निकट मोमिन कैसे हो सकते हैं जो खुले खुले तौर पर ख़ुदा के कलाम की तक़ज़ीब करते हैं और ख़ुदा तआला के हज़ारों निशानों को देखकर जो पृथ्वी और आकाश में प्रकट हुए फिर भी मेरी तक़ज़ीब से रुकते नहीं। वे ख़ुद को इस बात को स्वीकार करते हैं कि अगर मैं मुफ़्तरी नहीं और मोमिन हूँ तो इस स्थिति में वह मेरी तक़ज़ीब और निन्दा के बाद काफ़िर हुए और मुझे काफ़िर ठहरा कर अपने कुफ्र पर मुहर लगा दी। यह एक शरीयत का मामला है कि मोमिन को काफिर कहने वाला अंत काफ़िर हो जाता है। फिर जब कि लगभग दो सौ मौलवियों ने मुझे काफ़िर ठहराया और मेरे पर कुफ्र का फतवा लिखा और उन्हीं के फतवे से यह बात साबित है कि मोमिन को काफिर कहने वाला काफ़िर हो जाता है और काफ़िर को मोमिन कहने वाला भी काफ़िर हो जाता है। तो अब इस बात का आसान इलाज है कि अगर अन्य लोगों में ईमानदारी और ईमान की बात है और वह कपटी नहीं हैं तो उन्हें चाहिए कि इन मौलवियों के बारे में एक लंबा विज्ञापन प्रत्येक मौलवी का नाम निर्देश देकर प्रकाशित कर दें कि ये सब काफ़िर हैं क्योंकि उन्होंने एक मुसलमान को काफिर बनाया। तब मैं उन्हें मुसलमान समझ लूँगा। बशर्ते उनमें कोई पाखंड का संदेह न पाया जाए और ख़ुदा तआला के खुले खुले चमत्कार के इंकार करने वाले न हों। वरना अल्लाह तआला फरमाता है। اِنَّ الۡمُنٰفِقِیۡنَ فِی الدَّرۡکِ الۡاَسۡفَلِ مِنَ النَّارِ (अन्निसा: 146) अर्थात कपटी दोज़ख़ के निचले स्तर में डाले जाएंगे और हदीस में यह भी है ما زنا زانٍ وهو مؤمن وما سرق سارق وهو مؤمن2 अर्थात कोई व्यभिचारी व्यभिचार की हालत में और कोई चोर चोरी की हालत में मोमिन नहीं होता। फिर मुनाफिक (कपटी) पाखंड की स्थिति में कैसे मोमिन हो सकता है। अगर यह मामला सही नहीं है कि किसी को काफिर कहने से आदमी ख़ुद काफिर हो जाता है तो अपने मौलवियों का फतवा मुझे दिखलाएं मैं स्वीकार कर लूँगा और अगर काफ़िर हो जाता है तो दो सौ मौलवियों के कुफ्र के बारे में नाम बनाम एक विज्ञापन प्रकाशित कर दें। इसके बाद हराम होगा कि मैं उनके इस्लाम में शक करूं बशर्ते कोई पाखंड की सीरत उनमें न पाई जाए। 3

1 ज़ालिम से अभिप्राय इस जगह काफ़िर है। इस पर सन्दर्भ यह है कि मुफ़्तरी के मुकाबला पर अल्लाह की किताब का इंकार करने वाले को ज़ालिम ठहराया है और निश्चय वह व्यक्ति जो ख़ुदा की वाणी का इंकार करता है काफ़िर है। अत: जो मुझे नहीं मानता वह मुझे मुफ़्तरी करार देकर मुझे काफ़िर ठहराता है। इसलिए मेरे कुफ्र की वजह से आप काफ़िर बनता है। इसी में से।

2 बुख़ारी में इसी अर्थ की रिवायत इस तरह वर्णित है لا یزنی الزانی حین یزنی وهو مؤمن ولا یسرق حین یسرق وهو مؤمن

3 जैसा कि मैंने उल्लेख किया काफ़िर को मोमिन घोषित करने से मनुष्य काफ़िर हो जाता है क्योंकि जो व्यक्ति वास्तव में काफ़िर है उस के कुफ्र को नकारता है और मैं देखता हूँ कि जितने लोग मेरे पर ईमान नहीं लाते वे सब ऐसे हैं कि उन सभी लोगों को वे मोमिन जानते हैं जिन्होंने मुझे काफ़िर ठहराया है अत: मैं अब भी अहले क़िबला को काफिर नहीं कहता लेकिन जिन में ख़ुद उन के हाथ से उनकी कुफ्र की वजह पैदा हो गई उन्हें कैसे मोमिन कह सकता हूँ। इसी में से।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन,भाग 22, पृष्ठ 167 -169)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

पैग़ाम

ख़लीफतुल मसीहिल ख़मिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़

इज्तिमा ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत 15.16.17 अक्तूबर 2016

प्यारे ख़ुद्दाम तथा अत्फाल भारत!

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहू

मुझे यह जान कर बहुत ख़ुशी हुई है कि आप को सालाना इज्तिमा के आयोजन करने की तौफीक़ मिल रही है। अल्लाह तआला इस का आयोजन प्रत्येक दृष्टि से बरकतों वाला फरमाए। आमीन।

मुझे इस अवसर पर पैग़ाम भिजवाने का निवेदन किया गया है। **मैं आप को धर्म की सेवा की नसीहत करता हूं।**

यह युग भौतिकता का युग है। चारों तरफ माल कमाने और दुनिया की इच्छा की पूर्णता की दौड़ लगी हुई है। सामाजिक बुराइयां और चारित्रिक दोष चारों तरफ हैं। लोगों की व्यस्तता और रुझान बदल गए हैं। प्राथमिकताएं बदल गई हैं और प्रत्येक ओर एक ऐसा माहौल बढ़ रहा है जो धर्म से दूर लेकर जाने वाला है। परन्तु क्या एक मोमिन इन बातों पर ख़ुश हो सकता है। हरगिज़ नहीं। आप तो मोमिन हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने युग के इमाम को स्वीकार करने की तौफीक़ प्रदान की है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपना सारा जीवन धर्म की सेवा के कामों में अत्यधिक व्यस्त रह कर गुज़ारी। आप ने किताबें लिखीं। लोगों से मुनाज़रे किए। विभिन्न स्थानों के सफर किए। प्रत्येक समय लोग कादियान आते और आप इन की इच्छा पर उन को मुलाकात के समय प्रदान करते। आप अत्यधिक मेहनत करने वाले और न थकने वाले वजूद थे। अत: आप ख़ुश किस्मत हैं कि आप ने इस बरकतों वाले वजूद को स्वीकार किया और उस की बैअत के सिलसिला में दाख़िल हुए। याद रखें कि आप ने भी हुज़ूर अलैहिस्सलाम के बरकतों वाले तरीका को धारण करना है और यथा शक्ति धार्मिक कामों में हिस्सा लेना है। केवल धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता करने का अहद पर्याप्त नहीं इस पर अनुकरण करना भी आवश्यक है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

" यदि हो सके तो धर्म की सेवा करनी चाहिए। इस से अधिक ख़ुश किस्मती और क्या है कि इंसान का वक्त, वुजूद ,शक्तियां,माल ,जान ख़ुदा के मार्ग में खर्च हों। हमें तो केवल बीमारी के दौरा की चिन्ता रहती है। वरना दिल यही करता है कि सारी रात किए जाएं।

(मल्फूज़ात भाग 3 पृष्ठ 112)

फिर आप फरमाते हैं कि

" सफर करें तो धर्म की निय्यत से करें। दुनिया की निय्यत से जो करता है वह गुनाह करता है और इंसान तब ही ठीक हो सकता है कि प्रत्येक बात में कुछ न कुछ इस का धर्म की ओर लौटना हो। प्रत्येक मज्लिस में इस निय्यत से जाए कि कुछ हक धर्म का हासिल हो जाए। हदीस शरीफ में लिखा है कि एक आदमी ने मकान बनवाया। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में निवेदन किया कि आप वहां पधारें तो आप के कदमों से बरकत हो। जब वहां हज़रत गए। तो आप ने एक ख़िड़की देखी। पूछा कि यह क्यों रखी है। निवेदन किया कि हवा ठण्डी आती रहे। आप ने फरमाया अगर तू यह निय्यत करता कि आज़ान की आवाज़ सुनाई दे तो हवा भी ठण्डी आती रहती और सवाब भी मिलता।"(मलफूज़ात भाग 2 पृष्ठ 603-604)

अल्लाह तआला का शुक्र है कि उस ने मसीह मौऊद को एसी प्यारी जमाअत दी जिस के बहुत से लोग धार्मिक सेवा करना पसन्द करते हैं और जिन्हें एक बार यह आनन्द प्राप्त हो जाए इन के घर भी जमाअत के दफतर दिखाई देते हैं। उन की बातें धार्मिक होती हैं उन के दोस्त भी प्राय: वही होते हैं जो किसी न किसी रंग में धर्म की सेवा कर रहे होते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक स्थान पर फरमाया है

" सांसारिक सम्मान भी धर्म की सेवा से प्राप्त होता है।" (मलफूज़ात भाग 3 पृष्ठ 387)

अत: वे जिन्हें अभी इस की तौफीक़ नहीं मिली आगे आऐं और जमाअत की सेवा के लिए अपने आप को प्रस्तुत करें और इस प्रकार अपनी धार्मिक और सांसारिक तरक्की के सामान करें और अल्लाह तआला की तरफ से नाज़िल होने वाली बरकतों को अपनी हस्ती में देखें। अल्लाह तआला आप को इन नसीहतों पर अनुकरण करने की तौफीक प्रदान करे। आमीन

वस्सलाम

ख़ाकसार

मिर्ज़ा मसरूर अहमद

ख़लीफतुल मसीहिल ख़मिस

☆ ☆ ☆

122 वां
जलसा सालाना क़ादियान

(जलसा सालाना के आरम्भ पर 125 वां साल)
दिनांक 26, 27, 28 दिसम्बर 2016 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने 122 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 26, 27 और 28 दिसम्बर 2016 ई.(सोमवार, मंगलवार व बुधवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद।

ख़ुत्बः जुमअः

हर इंसान जो दुनिया में आता है एक दिन उसने इस दुनिया से विदा होना है बल्कि किसी चीज़ को भी चिर स्थायित्व नहीं है। कुछ अत्यधिक बचपन में अल्लाह तआला के पास चले जाते हैं अल्लाह तआला उन्हें अपने पास बुला लेता है, कुछ जवानी में, कुछ बड़ी आयु में और कुछ लोग अपनी उम्र के अन्तिम हिस्सा को पहुंचते हैं जिसे अल्लाह तआला ने कुरआन में अरज़ल उमर कहा है जिस उम्र में पहुंच कर फिर दोबारा उनके बचपन की, मोहताजी की और अज्ञनता की स्थिति हो जाती है। आख़िर वे भी इस दुनिया से विदा हो जाते हैं।

अल्लाह तआला ने हमें हर तकलीफ और मुश्किल और दुःख और सदमा की स्थिति में अल्लाह तआला की इच्छा में ख़ुश रहते हुए इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन की दुआ सिखाई है कि हम अल्लाह तआला के ही हैं और उसी की ओर लौटने वाले हैं और जब इस दुनिया से विदा होने वाले के करीबी अत्यधिक सबर दिखाते हैं यह दुआ पढ़ते हैं तो अल्लाह तआला जहां मृतक के स्तर को ऊंचा करता है वहाँ पीछे रहने वालों के संतोष के सामान भी पैदा करता है।

प्रिय रज़ा सलीम(पुत्र आदरणीय सलीम ज़फर साहिब) छात्र जामिया अहमदिया यू.के की इटली में हाईकिन्ग के समय एक दुर्घटना में अचानक वफात मरहूम का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 16 सितम्बर 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

हर इंसान जो दुनिया में आता है एक दिन उसने इस दुनिया से विदा होना है बल्कि किसी चीज़ को भी चिर स्थायित्व नहीं है। कुछ अत्यधिक बचपन में अल्लाह तआला के पास चले जाते हैं अल्लाह तआला उन्हें अपने पास बुला लेता है, कुछ जवानी में, कुछ बड़ी आयु में और कुछ लोग अपनी उम्र के अन्तिम हिस्सा को पहुंचते हैं जिसे अल्लाह तआला ने कुरआन में अरज़ल उमर कहा है जिस उम्र में पहुंच कर फिर दोबारा उनके बचपन की, मोहताजी की और अज्ञनता की स्थिति हो जाती है। आख़िर वे भी इस दुनिया से विदा हो जाते हैं। प्रत्येक करीबी रिश्तेदार को अपने क़रीबियों के दुनिया से विदा होने का सदमा होता है चाहे वह किसी भी उम्र में विदा हुआ हो लेकिन कुछ वजूद ऐसे होते हैं जिनके इस दुनिया से विदा होने पर, मृत्यु पाने पर, अफसोस करने वालों का दायरा बड़ा व्यापक होता है और अगर कोई ऐसा पसंदीदा व्यक्ति जवानी में इस दुनिया से अचानक विदा हो तो दुःख और अफसोस बहुत बढ़ जाता है लेकिन अल्लाह तआला ने हमें हर तकलीफ और मुश्किल और दुःख और सदमा की स्थिति में अल्लाह तआला की इच्छा में ख़ुश रहते हुए इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन की दुआ सिखाई है कि हम अल्लाह तआला के ही हैं और उसी की ओर लौटने वाले हैं और जब इस दुनिया से विदा होने वाले के क़रीबी अत्यधिक धैर्य दिखाते हैं, यह दुआ पढ़ते हैं तो अल्लाह तआला जहां मृतक के स्तर को ऊंचा करता है वहाँ पीछे रहने वालों के संतोष के सामान भी पैदा करता है।

पिछले दिनों हमारे एक बहुत ही प्यारे जामिया अहमदिया के छात्र की एक दुर्घटना के परिणाम में 23 साल की उम्र में मृत्यु हुई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। एक प्रिय ने मुझे बताया कि उनके दोस्त अपनी पत्नी के साथ सूचना मिलने के दो घंटे के भीतर ही मरहूम के माता पिता के पास अफसोस के लिए गए तो कहते हैं कि मेरी पत्नी की आश्चर्य की सीमा न रही जब दिवंगत प्रिय की मां ने कहा कि वह मेरा प्यारा बेटा था लेकिन उसे बुलाने वाला भी प्यारा है। यह है वह मोमिनाना शान का वह जवाब है जो हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने वालों में नज़र आता है। कोई चीख़ना चिल्लाना नहीं। हां अफसोस होता है उसमें मनुष्य रोता भी है सदमे की अत्यधिक स्थिति भी होती है और माँ से अधिक किसे युवा बच्चे की पीड़ा का किसे एहसास हो सकता है और अधिक किसे तकलीफ हो सकती है या पिता से अधिक किसे अपने युवा बच्चे के विदा होने का एहसास हो सकता है। पिता के बारे में मुझे यही बताया गया कि घटना की जानकारी मिलते ही बेहद सदमे की स्थिति में थे। रोए भी दुआ भी कर रहे होंगे लेकिन जब स्थिति स्पष्ट हो गई और थोड़ी देर बाद ही जब यह सूचना मिली कि मृत्यु हो गई है तो इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन पढ़ कर शांत हो गए। इसलिए यही वास्तविक मोमिनाना शान है युवा बच्चे की अचानक मौत इतनी जल्दी भुलाई नहीं जा सकती लेकिन एक मोमिन अपने दर्द अल्लाह तआला के सम्मुख उपस्थित होकर बयान करता है। रोता भी है और दिल के संतोष और मरहूम के स्तर की ऊंचाई के लिए दुआ भी करता है।

मैं जर्मनी के सफर पर था। वापसी का सफर उसी दिन शुरू हुआ था। सफर शुरू करने से पहले ही मुझे सूचना मिली कि हादसा हो गया है और फिर रास्ते में मृत्यु की सूचना भी मिली। प्रिय बच्चे का चेहरा बार बार मेरे सामने आता रहा दुआ की तौफीक़ भी मिलती रही। बड़ा प्यारा बच्चा था। जामिया यू.के के बच्चे नियमित रूप से मुझे मिलते रहते हैं इसलिए उन में से प्रत्येक से एक व्यक्तिगत संबंध भी है और परिचय भी है। मुलाकात के दौरान अगर मेरे पास कुछ समय हो तो सवाल-जवाब भी कर लेते हैं। इस बच्चे की अंतिम मुलाकात जब मेरे साथ हुई तो कुछ सवाल मन में थे। इसके जवाब में मैंने कुछ समय लगा कर काफी विस्तार से बताया। मुझे तो यह उसके पिता के कहने पर याद आया कि इस मुलाकात के बाद प्रिय बड़ा ख़ुश था कि आज कम से कम पंद्रह सोलह मिनट की मुलाकात में मेरे सवाल का विस्तृत जवाब मुझे मिला। हमेशा उसकी आँखों में ख़िलाफत के लिए एक विशेष प्रेम और चमक होती थी। जब प्रिय ने जामिया में प्रवेश किया है तो मुझे लगता था कि शायद उसे खेल कूद में अधिक रुचि हो और ईमानदारी व बैअत भी जैसा प्रत्येक अहमदी का होता है वैसा ही होगा और इतनी बचपन की उम्र में जो बच्चों का होता है वही होगा लेकिन इस बच्चे ने मेरे अनुमान को बिल्कुल ग़लत साबित कर दिया। पढ़ाई में भी बुद्धिमान निकला निःसन्देह खेलों में रुचि थी और ईमानदारी व बैअत में भी बहुत बढ़ा हुआ था। एक जोश था कि ख़िलाफत और धर्म की रक्षा के लिए नंगी तलवार बन जाऊं और जैसा कि कुछ हालात उसके दोस्तों ने लिखे हैं उस ने यह कर भी दिखाया। असंख्य लिखने वाले उसके दोस्तों ने, उस की कक्षा के साथियों ने, जामिया के छात्रों ने बहन भाई और माता पिता ने मुझे उसकी विशेषताओं का उल्लेख किया। एक बात तो लगभग हर एक ने लिखी कि विनम्रता, अच्छे चरित्र, धर्म का सम्मान, ख़िलाफत से सम्बन्ध और मुहब्बत , मेहमान नवाज़ी, भावनाओं का सम्मान यह विशेष विशेषता थी। ऐसे लोग जिनकी प्रत्येक प्रशंसा करता है आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेश के अनुसार उन

लोगों में शामिल हैं जिन पर जन्नत वाजिब हो जाती है और यह बच्चा तो धर्म की सेवा की एक विशेष भावना रखता था और शायद खेलों और हाईकिनग आदि में भी हिस्सा इसलिए लेता था कि सेहत वाला शरीर धर्म की सेवा के लिए आवश्यक है। इस का विवरण लिखने वालों ने इस प्यारे बच्चे के बारे में जो अभिव्यक्ति किए हैं प्रत्येक की अभिव्यक्ति ऐसी है जो उसकी विशेषताओं को प्रकट करती है।

प्रिय रज़ा सलीम जो हमारे कार्यालय प्राइवेट सैक्रेट्री के कार्यकर्ता सलीम ज़फर साहिब के बेटे थे 10 सितम्बर 2016 ई. को इटली में हाईकिनग के दौरान एक दुर्घटना में वफात पा गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। यह 27 सितंबर 1993 ई. को गल्फ़र्ड यू.के में पैदा हुए थे। वक्फ नौ तहरीक में शामिल थे। उनके परिवार में अहमदियत उनके पड़दादा आदरणीय अलादीन साहिब के द्वारा आई जिनका संबंध कादियान के निकट एक गांव से था। उन्होंने हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी के हाथ पर बैअत की थी। प्रिय ने 2012 ई. में जामिया अहमदिया यू.के में दाख़िला लिया था वह अपने परिवार में पहले मुरब्बी बन रहे थे और दर्जा सालिसा पास कर चुके थे और राबिया में जाने वाले थे। मरहूम मूसी थे। वसीयत का फार्म उन्होंने भर दिया था और कार्रवाई हो रही थी जिसे मैंने कारपरदाज़ को लिखा कि वसीयत उन की मंजूर है। माता-पिता के अतिरिक्त उनकी दो बहनें और दो भाई भी हैं।

हाफिज़ एजाज़ अहमद साहिब जो जामिया अहमदिया यू.के शिक्षक हैं और हाईकनग प्रभारी भी हैं वह साथ गए हुए थे। वह इस घटना का कुछ विवरण करते हुए लिखते हैं कि हम ने एक दिन पहले पहाड़ की चोटी पूरी की थी और रात क़रीब पांच सौ मीटर नीचे एक hut में बिताई। ऊपर से नीचे आ गए थे जो कठिन रास्ता था वह तय कर चुके थे। जहां हमारे साथ लगभग दस के क़रीब अन्य हाईकरज़ भी थे। सुबह करीब 8 बजे हम hut से वापसी के लिए रवाना हुए। उस समय मौसम भी बिल्कुल साफ था। हम पंक्ति में एक साथ जा रहे थे कि अचानक प्रिय रज़ा सलीम का पैर फिसला या किसी पत्थर से टकरा गया जिस से वह संभल न सका और तेजी से ढलान की वजह से आगे की ओर भागे मगर काबू न रख सके और सिर के बल नीचे गिरे। उन्होंने सिर पर हेलमेट पहन रखा था मगर फिर भी नीचे गिरने की वजह से सिर पर चोट आई। डॉक्टरों का मानना है कि गिरने के दौरान पहले से ही या बेहोशी की स्थिति थी चोट लगने से पहले ही या साँस रुक गया था बहरहाल क्योंकि सीधे गिरे थे कहते हैं इतने में विनीत ने उन्हें पकड़ने की कोशिश की लेकिन सफलता नहीं हुई तो एक और छात्र हुमायूं जो आगे जा रहे थे उन्हें आवाज़ दी उस ने भी पकड़ने की कोशिश की हुमायूं का हाथ उन्हें लगा भी मगर वह भी पकड़ने में कामयाब नहीं हो सके। रज़ा सलीम गहराई की तरफ गिर गए। हादसा देखकर कुछ अन्य छात्रों ने भी उन्हें बचाने के लिए नीचे जाने की कोशिश की मगर कहते हैं मैंने उन्हें मना कर दिया क्योंकि उस समय शॉक की वजह से किसी में भी चलने की हिम्मत नहीं थी दूसरा उस से बड़े नुकसान का खतरा था। बाद में उस मार्ग पर चलने वाले अन्य लोगों की मदद से शेष सभी छात्रों को ऊपर ले कर आया। जो बाकी छात्र साथ थे ये लोग भी काफी नीचे उतर गए थे। दुर्घटना के तुरंत बाद आपातकालीन सेवा को फोन पर सूचना दी गई और बीस मिनट के अंदर हेलीकाप्टर आ गया। रज़ा सलीम हमारी दृष्टि के सामने था। हम ने हेलिकॉप्टर को स्थान बताया जहां उन्होंने हेलीकाप्टर की मदद से अपना आदमी उतार दिया जब तक पूरे समूह हेलीपैड तक नहीं पहुँच गया तब तक उन्होंने रज़ा सलीम की मौत के बारे में कोई सूचना नहीं दी। जब सभी छात्र हेलीपैड के पास सकुशल पहुंचे तो आपात काल सेवा वालों ने रज़ा सलीम की मौत की पुष्टि की फिर एक घंटे के भीतर क़रीबी शहर में सभी छात्रों को हेलीकाप्टर द्वारा पहुंचा दिया गया। इस हादसा के समय मौसम बिल्कुल साफ था और जिस ट्रैक पर हम चल रहे थे उसका नाम ही सामान्य ट्रैक टू पैक है और उनके पिता रज़ा सलीम साहिब भी वहां गए थे। उन्होंने भी मुझे बताया कि वहाँ के लोग मिले और लोग तो कहते थे कि बिल्कुल सामान्य ट्रैक था कोई मुश्किल नहीं था। हमारे बच्चे भी यहां से गुज़रते थे और एक बूढ़ा आया उसने बताया कि प्रतिदिन यहां सैर करता था। कहते हैं सामान्य रूप में बच्चे बड़े सब ट्रैक पर चलते हैं। वहां पर मौजूद स्थानीय लोगों से जिसे भी इस हादसे की ख़बर मिली उन्होंने कहा कि ज़ाहिरी तौर पर इस ट्रैक में कोई खतरा नहीं था अल्लाह तआला की तकदीर ही मालूम होती है।

बहरहाल यह सारा विवरण इसलिए भी मैंने बताया है कि कुछ लोग फ़ोनों पर, संदेशों और वट्स अप एप्लिकेशन या अन्य माध्यमों से कुछ ग़लत प्रकार की टिप्पणी भी कर रहे हैं कि शायद अकेला बाहर चला गया था। मौसम ख़राब था। पूरे इंतज़ाम नहीं थे। कपड़े नहीं पहना हुआ था हालांकि वहां के स्थानीय अख़बार ने जो ख़बर लिखी है उसने भी बताया कि पूरे तौर पर जो ज़रूरी सामान होता है वह इन लोगों ने पहना हुआ था। ऐसी टिप्पणी करने वाले लोगों को भी बुद्धि से काम लेना चाहिए। ऐसे मौकों पर व्यर्थ टिप्पणियों के स्थान पर सहानुभूति व्यक्त करना चाहिए और न ही प्रशासन का दोष है न ही किसी का कसूर है। बस अल्लाह तआला ने समय रखा होता है। आई थी, पत्थर फिसला है या क्या हुआ कैसे गिरा चक्कर आया या जो भी कारण हुआ लेकिन बहरहाल एक भाग्य था। अल्लाह तआला ने शायद उसकी उतनी ही ज़िन्दगी रखी थी। जो बाकी बच्चे साथ थे वे भी सदमा में हैं अल्लाह तआला उन्हें भी हिम्मत और हौसला दे और अपने सामान्य जीवन में वह जल्द वापस आ जाएं। यादें तो भुलाई नहीं जा सकतीं जैसा कि पहले भी कहा दोस्तों में उल्लेख भी चलते रहेंगे लेकिन जामिया के छात्रों को भी इससे किसी भी तरह की निराशा पैदा नहीं होनी चाहिए भय पैदा नहीं होना चाहिए।

सलीम ज़फर साहिब लिखते हैं कि मेरा बहुत ही बेटा प्यारा था। कई गुणों का मालिक था। कहते हैं कुछ का वर्णन करता हूँ। हमेशा सच बोलता था। अगर कोई ग़लती हो गई हो तो छुपाता नहीं था। अगर डांट भी पड़े तो इसकी परवाह नहीं करता था। अपनी ग़लती को स्वीकार करना और सच पर कायम रहना उसकी आदत में शामिल था। बच्चों से बड़ा प्यार करने वाला था। अपनी बहन के बच्चों से बहुत प्यार करता। अगर वह बहन अपने बच्चों को डांटती तो यह इतना संवेदनशील था कि स्वंय रो पड़ता और यह कहा करता था कि बच्चों का सुधार मारने से नहीं होता। मेरे से मुलाकात का पहले उल्लेख किया है। उन्होंने भी लिखा है कि जब भी मुलाकात होती बड़ा ख़ुश होकर फ़ोन पर बताता था कि आज मेरी मुलाकात हुई है और कहते हैं हमें भी इन खुशियों में शामिल करता था और यह भी कहते हैं कि मुलाकात से पहले यह कार्यालय से नाख़ुन काटने वाला कटर ज़रूर मांगता था कि मैं अंदर जा रहा हूँ हाथ मिलाते हुए कहीं मेरा नाख़ुन न लग जाए। कितने हैं जो इस बारीकी से अनुभव करने वाले हैं। दूसरों को चीज़ें देकर ख़ुशी महसूस करता था। कहते हैं बचपन से ही हम इसके लिए चॉकलेट या अन्य सामान आदि लेकर आते थे तो सप्ताह का सामान लाते थे तो अगर उसके हाथ लग जाती थीं तो ले जा के अपने छात्रों में बांट दिया करता था। जामिया में पढ़ाई के दौरान भी जो लड़के लंदन के बाहर से आए होते थे, weekend पर अपने घरों को नहीं जा सकते थे तो अपनी अम्मी को या बहन को उन्हें बता दिया करता था कि मेरे साथ इतने दोस्त आ रहे हैं इसलिए वह हमारे साथ खाना खाएंगे। हमारे साथ भोजन तैयार रखें। अगर कोई चीज़ खाने के लिए उसे देते कि छात्रावास में जा रहे हो यह रख लो तो अगर वह पर्याप्त होती तो लेकर जाता कि मेरे रूममेट जो हैं उन्हें पूरी आ जाए वरना छोड़ जाता कि मैं छुप-छुप के भोजन नहीं कर सकता। अपने दोस्तों के कपड़े भी कहते हैं कई बार घर ले आता था कि मेरे दोस्त के कपड़े हैं उन्हें धोकर इस्त्री कर दें। बहन भाइयों से भी बहुत प्यार का संबंध था। पूरी ज़िम्मेदारी से प्रत्येक के काम करना, सेवा करना, अपने लिए तो बेशक हाथ रोकता था। कंजूसी तो नहीं कहनी चाहिए, परन्तु अधिक खर्च नहीं था लेकिन दूसरों के लिए खुला हाथ था और वसीयत भी जैसा कि मैंने कहा इस की अल्लाह तआला की कृपा से स्वीकार हो गई थी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़िलाफत से अत्यधिक मुहब्बत थी और उसके ख़िलाफ़ कभी कोई बात नहीं सुनता था और कभी बात सुन के चुप नहीं रहता था। अगर कोई ऐसी बात सुने चाहे कोई भी हो, कहते हैं हमेशा चेहरा लाल हो जाया करता था। कहते हैं कि क्योंकि बहुत साबिर था, कभी मांगता नहीं था इसलिए हमें इसकी आवश्यकताओं का ख़ुद ही ख्याल रखना पड़ता था। पढ़ाई के दौरान हमेशा उन लड़कों की इंग्लिश में बड़ी मदद किया करता था जो यू.के के बाहर से थे विशेष रूप से यूरोप से आने वाले थे। कुछ लड़कों ने मुझे लिखा, बड़े वरिष्ठ लड़कों ने भी लिखा कि हमारी इंग्लिश के पर्चे के दौरान पढ़ाने की बड़ी मदद किया करता था। ग़ुस्सा नाम की तो कोई चीज़ उसमें नहीं थी। हमेशा उसे हंसते मुस्कुराते देखा और यह हर एक ने लिखा है। पवित्र मज़ाक ख़ुद भी करता था और इस से आनंदित होता था। नमाज़ का बहुत अधिक पाबन्द था। वक्फ नौ में तो था ही पिता कहते हैं इनके वाकफे ज़िन्दगी होने का भी सम्मान अल्लाह

तआला ने दिया। हमेशा सच बोल कर सिद्दीकी गुण को अपनाया अपनी ताकत के अनुसार उसमें भाग लिया। कहते हैं मेरी चिर इच्छा थी कि यह मुरब्बी बनकर जमाअत की सेवा की तौफ़ीक़ पाए। उन्होंने मुझे कहा तो मैंने उन्हें यही कहा था कि यह बच्चा तो जामिया की पढ़ाई पूरी करने से पहले ही मुरब्बी बन चुका था और कुछ घटनाएं बताऊँगा कि कैसे उसे तरबियत का भी, तब्लीग़ का भी शौक था और जो सफर थी यह भी जैसा कि पहले मैं ने कहा कि स्वस्थ शरीर के लिए निश्चित रूप से यह सफर किया उसने और इस दृष्टि से यह भी एक धार्मिक सफर ही कहना चाहिए। अल्लाह तआला उसके स्तर भी ऊंचा करता रहे और करीबियों में जगह दे। उनके पिता लिखते हैं मैनचेस्टर वक्फ आरज़ी पर गया हुआ था जिस दिन वापस आना था वहां से किसी ने एक लिफाफा उसकी जेब में डाल दिया। यह उस ने खोलकर देखा तो उसमें कुछ राशि थी। रज़ा ने धन्यवाद के साथ वापस की और कहा कि अंकल हमें यह लेना मना है। इसी व्यक्ति ने कुछ दिन बाद मुझे पत्र भी लिखा कि एक छोटा सा बच्चा जो मुरब्बी बन रहा है वह यहाँ आया था और हमें हैरान कर गया। अगर ऐसे बच्चे मुरब्बी बनेंगे तो निश्चित रूप से जमाअत में आध्यात्मिक परिवर्तन आएगा। क्योंकि (मुझे लिखा कि) इस तरह उसे दिया गया और उसने लेने से इनकार कर दिया और बड़ी मेहनत से अपने काम को अंजाम दिया

उनकी माँ लिखती हैं कि मेरा बेटा अपने पिता और जमाअत का पालन करने वाला था। मेरे साथ उस का प्यार का संबंध था। वैसे तो हर बच्चे के माता पिता से प्यार का संबंध होता है लेकिन उसका प्यार का सम्बन्ध बहुत निराला था। ध्यान रखने वाला, बात मानने वाला, हर छोटी बात में बड़े ही अच्छे तरीके से बात करता छोटों और बड़ों से बड़े प्यार से पेश आता। जब भी घर में होता है मेरे घर के कामों में मदद करता। थोड़ी थोड़ी देर बाद पूछता कि आप थक गई हैं, कोई मदद कर दूं। कभी मुझे परेशान नहीं देख सकता था और यही कहता था कि आप की आँखों में आंसू नहीं दिखेंगे। जामिया से वापस आते ही घर में सब लोगों का पूछता और पूरे सप्ताह सब कैसे रहे सब की बड़ी चिंता से पूछता। छोटा था तो जब हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे इस्लामाबाद जाया करते थे तो स्कूल से आते ही भाग जाता था कि हुज़ूर को मिलने जा रहा हूँ और साथ सैर भी करनी है। डॉक्टर नुसरत जहां साहिबा जो रबवा की हैं आजकल यहाँ काफी बीमार हैं अल्लाह तआला उन्हें भी सेहत दे उनका उनके घर से काफी संबंध था। वह कहा करता था कि मैं उनके लिए बड़ी दुआ करता हूँ और अल्लाह तआला उन्हें स्वास्थ्य दे। अल्लाह तआला इसकी दुआएं भी उनके लिए स्वीकार करे। यह लिखते हैं कि मैंने जुम्अ: की रात सपने में देखा कि मेरे घर बड़े लोग आ रहे हैं और बड़ी तस्वीर बन रही हैं। मैं डर कर उठी और अपने पति को कहा कि मुझे सपना आया है जिससे मैं डर गई हों। मुझे इस सपने का अच्छा प्रभाव नहीं है तो सुबह होते सदका दे दें। उन्होंने कहा कि कार्यालय जाऊँगा तो सदक़ा दे दूंगा लेकिन इससे पहले ही यह चौंकाने वाली सूचना आ गई। माता कहती हैं कि जब भी कोई कपड़ा लाकर में देती तो आराम से पहन लेता और बड़ी प्रशंसा करता है। आतिथ्य में तो बहुत ही बढ़ा हुआ था अगर कोई एक बार उसे आमंत्रित कर लेता तो भूलता नहीं था और जब कभी वह कहीं मिलते या इस्लामाबाद आते तो तुरंत घर आकर कहता कि अमुक अमुक लोग आए हुए हैं खाना बनाओ उन्हें खाने पर बुलाएं।

फिर यह कहती हैं कि अपने सफर पर जाने से पहले मुझे फोन में उर्दू में लिखना सिखाता रहा कि आप को अन्य भाई बहनों से हाल पूछना पड़ता है तो मुझे उर्दू में लिखने के लिए और ख़ुद जवाब दिया करूंगा। कहती हैं जो भी मैंने समझाया उस पर अनुकरण करने की पूरी कोशिश करता और यही उसने दोस्तों को भी बताया। ख़िलाफत के साथ संबंध बनाए रखा। निज़ाम जमाअत के हर छोटे से छोटे आदेश का पालन करने की कोशिश करता है। इस की माता कहती हैं कि एक बार मुझे कहा कि अम्मी मेरा दिल करता है कि मैं इतना अच्छा मुरब्बी बनूँ कि जमाअत की बहुत तब्लीग़ करूं और इतने अहमदी बनाऊँ कि आप को मुझ पर गर्व हो।

उसकी बहन राफिआ साहिबा कहती हैं बड़ा प्यारा भाई था। छोटा था मगर उसकी सोच बड़ी गहरी थी। छोटा हो कर सब का ख्याल रखने वाला और हर उम्र के लोगों के साथ उनकी उम्र के अनुसार होकर बात करता और आज तक कभी किसी का दिल नहीं दुखाया। हर बात को बड़े आराम से सुनता और बड़े आदर के साथ उत्तर दिया करता।

इस्लामाबाद में काम करने के लिए जो कार्यकर्ता लोग जाते थे, कुछ पहले मरम्मत आदि होती थीं या लजना हॉल बन रहा था तो वहां भी उनका ख्याल रखना, चाय पहुंचाना या अन्य खाने-पीने की चीजें देना। हर समय उनकी सेवा करता था और लोग कहते थे कि केवल यह लड़का ही है जो हमें पूछता है।

उसके भाई असद सलीम कहते हैं कि बहुत सरल स्वभाव का था। साफ और सीधी बात करने वाला। हमने अभी अभी ही में उस के लिए एक नई कार ख़रीद कर दी और उसे सरप्राइज़ दिया। दोनों भाई अच्छा काम करते हैं वह अपने छोटे भाई को कार खरीद कर दी। कहते हैं पहली बात जो इस ने इस कार के बारे में पूछी वह इसकी क़ीमत थी और कहा कि मुरब्बी के रूप में साधारण जीवन गुज़ारना चाहिए बहुमूल्य चीजें नहीं लेनी चाहिए।

उनकी बहन अमतुल हफीज़ साहिबा लिखती हैं। एक ख़ूबी यह थी कि किसी व्यक्ति की बुराई सुनना पसंद नहीं करता था और उसमें यह क्षमता थी कि लोगों के नकारात्मक विचारों को अच्छे रंग में बदल देता था। उसका कहना यही होता था कि हमें लोगों की अच्छाइयों पर नज़र रखनी चाहिए और उनकी बुराइयों के बारे में बात करने के स्थान पर उनके लिए दुआ करनी चाहिए। तबीयत में सादगी का एक उदाहरण यह है कि माँ साहिबा उसे ईद पर नए कपड़े खरीद कर देती तो वह कपड़े पहन कर बहुत चिंतित रहता कहीं इन कपड़ों में अत्यधिक बनावट और दिखावा न हो जाए। इसलिए अपनी कोई पुरानी चीज़ पहन लेता कोई जैकेट आदि।

कुद्दूस साहिब जामिया अहमदिया के शिक्षक हैं वह भी साथ थे। कहते हैं कि रज़ा सलीम को बचपन से जानता हूँ। जामिया में दाख़िला लिया तो उस समय मैं शाहिद कक्षा में था इस दृष्टि से कहते हैं विनीत ने जामिया में एक ही साल उनके साथ गुज़ारा है लेकिन ख़ुद्दामुल अहमदिया की तरबियती किलासें इज्तिमाओं और जलसा सालाना में डयूटियाँ इकट्ठे देने का अवसर मिलता रहा। सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया ने भी मुझे बताया कि वहाँ जो ख़ुद्दामुल अहमदिया के इज्तिमाओं पर लड़कों के साथ सवाल तथा जवाब में यह बड़ा अच्छा काम किया है। कुद्दूस साहिब लिखते हैं कि रज़ा सलीम की ड्यूटी hygiene के विभाग में लगती थी। यहाँ hygiene कहते हैं शब्द बड़ा चुना हुआ है लेकिन मूल जो चीज़ यही है सफाई आदि का ख्याल रखना लेकिन कभी भी उन्होंने यह नहीं कहा कि इस विभाग में उनकी ड्यूटी क्यों लगाई गई है बल्कि वह ड्यूटी बहुत मेहनत लगन और स्थिरता से किया करता था। यह कहते हैं कि मुझे जामिया में पढ़ाने का मौका मिला बहुत योग्य छात्र था। कक्षा में सबसे आगे attentively बैठते और हमेशा मुस्कुरा कर बात करता। मुझे याद नहीं है कभी उसने किसी प्रकार का ग़ुस्सा व्यक्त किया हो बल्कि दूसरों की मदद करने की हमेशा कोशिश करता। क्रिकेट का भी शौक था लेकिन अगर रन आदि देखना होता तो हमेशा टीचर से पूछ जाता। कहते हैं कि हाइक के दौरान हम ने एक रात hut में गुज़ारी जिस के बाथरूम के दरवाज़ा का लॉक नहीं था। सब ने उसे कहा कि वह दरवाजे पर खड़ा रहे और बड़ी ख़ुशी से यह काम किया और यह भी कहा कि अगर रात को किसी को जाना पड़े तो उस समय मुझे बेशक उठा देना। अपने हाइक के दौरान अपने सहपाठी ज़ाफिर के साथ हाईकनग के बाद क्रोएशिया जाना था। वहां ज़ाफिर की आँख पर उसे चोट लग गई तो बार बार चिंता जताई कि हाइक खत्म कर के नीचे जाकर इंशा अल्लाह तुम्हारी अस्पताल से जाँच करवाएंगे। यह लिखते हैं कि रज़ा सलीम बहुत ही श्रद्धालु वाकफ ज़िन्दगी था। मेहनत स्थिरता और प्रत्येक से आचरण से पेश आना इसकी प्रमुख विशेषताएं थीं।

इसी तरह ज़हीर खान साहिब जामिया अहमदिया के एक शिक्षक हैं। वह भी लिखते हैं कि पिछले दो सालों से रज़ा की कक्षा को पढ़ाने की तौफीक पा रहा था। विनीत ने इस बच्चे में एक अद्वितीय ख़ूबी यह देखी थी कि जो काम उसे सौंपा जाता उसे वह बहुत मेहनत लगन और ज़िम्मेदारी की भावना के साथ करता है। कभी कभी मैंने देखा कि इस काम में लगे बचे अगर इधर उधर चले गए हैं तो यह अकेला इस काम को अंजाम दे रहा होता था और जब तक काम पूरा न हो जाता अपनी ताकत के अनुसार उस पर जुता रहता था। रज़ा सलीम की एक बहुत प्यारी आदत थी कि कभी अनावश्यक सवाल नहीं पूछता था और जब कभी सवाल पूछता तो वह आमतौर पश्चिमी दुनिया में इस्लाम और अहमदियत के बारे में होने वाली आपत्तियों पर आधारित होते और कभी कभी कहता कि किसी ग़ैर मुस्लिम या ग़ैर अहमदी दोस्त से बात हुई और उसने यह सवाल पूछा था मानो अल्लाह तआला ने उसके दिल में इस्लाम और अहमदियत की रक्षा और उन पर होने वाले आपत्तियों के जवाब देने की जोत जला रखी थी। कहते हैं प्रिय रज़ा एक दो बार मेरे साथ कार में बैठा। लिफ्ट

ली और उसकी दो बार उसकी यू.एस.बी छड़ी जेब से कार में गिर गई और यू एस बी हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों की ऑडियो रिकॉर्डिंग होती थी कोई ऊटपटांग चीज़ नहीं होती थी

इसी तरह वहां के शिक्षक सैयद मशहूद अहमद लिखते हैं कि ट्यूटोरियल समूह में शामिल था। शैक्षिक गतिविधियों के साथ ज्ञान और व्यायाम प्रतियोगिताओं में भी असाधारण रुचि लिया करता था। उस की जनरल नॉलेज अन्य छात्रों की तुलना में बहुत अच्छी थी और इसी तरह कहते हैं पिछले साल प्रतियोगिता बैअत बाज़ी में में भाग लेने के लिए प्रिय ने लगभग पांच सौ से अधिक शेर याद किए थे और यह ख़ूबी बड़ी स्पष्ट थी कि शेर याद करने से पहले यह केवल रट्टा नहीं मार लेता था बल्कि उनका विषय समझा करता था और जिसके लिए वरिष्ठ छात्रों और शिक्षकों से मार्गदर्शन लिया करता था। कहते हैं रज़ा सलीम को तब्लीग़ का बहुत शौक था। पिछले साल उस को वक्फ आरज़ी के लिए वलवर हैम्पटन की जमाअत में भेजा गया जहां उस ने लीफ लेटस के वितरण के अतिरिक्त स्थानीय जमाअत के मित्रों के साथ मिलकर कई मिशनरी स्टाल भी लगाए और इस दौरान उनकी मुलाकात एक अंग्रेज़ से हुई जो धार्मिक रूप से एक सक्रिय ईसाई था। उस ने जब उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वर्णन की गई अनुसंधान के प्रकाश में हज़रत मसीह नासरी अलैहिस्सलाम के सलीब से निजात पाने और कश्मीर की ओर पलायन करने के बारे में बताया तो वह बहुत हैरान हुआ। बाद में उसके साथ उस को मस्जिद विज़िट भी करवाई। उस को दावत भी की और उसके बाद भी उस से स्थायी तब्लीग़ का संपर्क रखा। इसी तरह इस्लामाबाद और जामिया के साथ स्थानीय जमाअत इस्लामाबाद और जामिया अहमदिया के साथ लीफ लेटस वितरण और तब्लीग़ स्टालों के लिए हमेशा तैयार रहता। पिछले साल यहां उनकी कक्षा के कुछ छात्र या जामिया के छात्र गर्मियों में स्पेन गए थे और वहाँ उन्हें मैंने कहा था कि कम से कम पचास हज़ार लीफ लेटस पमफलटस वितरित कर के आने हैं और अल्लाह तआला की कृपा से इस समूह ने पचास हज़ार पांच सौ लीफ लेटस वहाँ वितरित किए।

इसी तरह मंसूर ज़िया साहिब जामिया के शिक्षक हैं लिखते हैं कि बड़े ही धीमे मिज़ाज का छात्र था कभी मैं उनके चेहरे पर तेवर या क्रोध के चिन्ह नहीं देखे। ख़िलाफत और जमाअत की आस्थाओं पर अनावश्यक आपत्ति जब किसी ने किए तो इस अवसर पर कहते हैं कि मैंने उस के चेहरे पर बहुत ग़ुस्सा देखा और कहते हैं ये बातें यह स्पष्ट सबूत थीं कि उस में ख़िलाफत से प्यार और उस का सम्मान कूट कूट कर भरा हुआ था। कहते हैं ख़िलाफत से प्रतिबद्धता का एक उदाहरण यह भी है और इसी तरह धार्मिक ज्ञान सीखने की भी है कि जब भी मैंने क्लास में मेरे ख़ुत्बा के बारे में उल्लेख किया और कोई समीक्षा ख़ुत्बा के हवाले से की तो उस को बहुत सी बातें याद होती थीं बड़े ध्यान से सुनने वाला था। फिर यह भी वही कहते हैं जो सारे लिख रहे हैं कि देखा कि उस को तब्लीग़ का बहुत शौक था। सोशल मीडिया पर ग़ैर अहमदियों को तब्लीग़ करना उस का सामान्य काम था और शिक्षकों के मार्गदर्शन में बड़ी मेहनत के साथ ग़ैर अहमदी मित्रों की आपत्तियों के तर्क से जवाब तैयार किया करता था।

फिर उन में एक सहपाठी प्रिय सफीर अहमद लिखते हैं कि मेरा संबंध बेल्जियम से है और उन्हें पता था कि मैं वहाँ से हूँ। weekend पर घर नहीं जाता तो weekend पर हमेशा मुझे अपने घर का पका हुआ खाना खिलाने के लिए ज़रूर लेकर जाता। इसी तरह अंग्रेज़ी हमारी कमजोर है तो हमेशा अंग्रेज़ी को समझा कर फिर परीक्षा की तैयारी करवाता।

इसी तरह शाह ज़ेब अतहर है वह भी कहता है प्रिय बड़ा नरम स्वभाव और ख़ुशी से दूसरों को मिलने वाला व्यक्ति था। हर समय दूसरों की मदद के लिए तैयार रहना। कहते हैं जब हमें वक्फ आरज़ी के लिए भेजा गया और बाज़ार में हम ने मिशनरी स्टाल लगाया तो दो ईसाई लोग आए। रज़ा ने बहुत अच्छे तरीका से जमाअत का संदेश पहुंचाया। मरहूम का ज्ञान बहुत व्यापक था और तब्लीग़ करने का बहुत जुनून था। कभी क्रोध से बात नहीं करता था। लड़कों को जमा करता और फिर दूसरे मनोरंजन कार्यक्रम भी बनाता है। कहते हैं एक घटना विनीत को याद है 2014 ई. के अगस्त की वक्फ आरज़ी के दौरान विनम्र और रज़ा सलीम मरहूम ने तब्लीग़ी स्टाल लगाया हुआ था। जाने से थोड़ी देर पहले ब्रेटेन प्रथम(Braitain First) वाले आ गए। ये लोग इस्लाम के ख़िलाफ हैं, लीफ लेटिंग कर रहे थे। जब वह हमारे पास पहुंचे तो रज़ा सलीम से ग़ुस्सा की शैली में सवाल पूछते रहे लेकिन उन्होंने नम्रता और नरमी से सभी सवालों के जवाब दिए और अंत में उन्हें पता लग गया कि यह उन मुसलमानों में से नहीं है जो चरम पंथी हैं।

इसी तरह जमिया में उनके एक पढ़ने वाले ज़ाफर कहते हैं कि जमाअत में उन के साथ बैठा था तो एकदम बोर्ड मार्कर हाथ में लिया और कहा कि ज़फिर हम जामिया में बहुत समय बर्बाद कर रहे हैं और समय सारिणी लिखने लगा कि खाली समय को हाईलाइट करके कहता था कि हमें इस समय भी कुछ न कुछ करना चाहिए और इस समय भी समय नष्ट करने के स्थान पर प्रोजेक्टिव (Productive) बनाना चाहिए।

इसी तरह उस ने ख़ाना समय में शिक्षकों के साथ बैठ के विभिन्न subjects पढ़ने का इरादा था। फिर यही लड़का है जिसकी आंख का पहले उल्लेख हो चुका है हल्की सी घायल हो गई थी। कहते हैं मुझे चोट लगी थी और बार बार अंत समय तक मुझे कहता था कि ज़ाफ़िर जैसे ही हम नीचे पहुंचेंगे अस्पताल जाएंगे ताकि तुम्हारा सही इलाज हो सके और फिर कहते हैं कि दुर्घटना से पहले अब पहाड़ से नीचे आते हुए अगर कभी मेरा पैर फिसला। ज़ाफिर का पैर फिसला करता था और मरहूम को बड़ी चिंता होती थी और कहता था कि ध्यान से चलो। इसी तरह पिछले साल कहते हैं हाईकनग के दौरान मुझे ऊंचाई के कारण परेशानी हो गई जो altitude sickness कहते हैं बार बार मुझे तसल्ली दिया करता हाल पूछा करता लेकिन यह नहीं पता था कि नियति को कुछ और मंजूर है। फिर weekend से वापस आकर हमेशा जमाअत पर होने वाले आपत्तियों को याद कर के आता और अपने शिक्षकों से उनके जवाब पूछा करता।

इसी तरह एक और छात्र जामिया हाफिज ताहा हैं कहते हैं कि ख़िलाफत का फिदाई था। समय के ख़लीफा से बेहद प्यार करने वाला था। किसी से समय के ख़लीफा से जमाअत के निज़ाम के विरुद्ध कोई बात सहन नहीं करता था। एक बार किसी ऐसे व्यक्ति ने जो जमाअत से दूर हो गया था ख़िलाफत से संबंधित कोई ग़लत बात मुँह से निकाली तो रज़ा ने उसे कहा कि मैं तुम्हारी सारी बातें सुन तो सकता हूँ मगर ख़िलाफत से संबंधित या ख़िलाफत के ख़िलाफ कोई बात बर्दाश्त नहीं कर सकता।

फिर एक छात्र दानियाल लिखते हैं कि पिछले साल की हाईकिनग थी। उसके बाद हम सब हाफिज एजाज़ से अगली हाइक पर जाने का हाईकनग का lesson ले रहे थे और बहुत खुश था और हम एक साथ फोन पर वीडियो बनाकर भेज रहे थे। हमेशा हमें ख़ुश रखने की कोशिश करता है। यह कोशिश होती है कि समय बर्बाद न हो हर सप्ताह कोई नई किताब का अध्ययन करता रहता। मरहूम की कोशिश यही रहती है कि तहज्जुद का पाबंद रहे और अपने दोस्तों को भी कहता कि तहज्जुद के समय अगर वह सोया हो तो उसे सख्ती से जगा दिया जाए। जामिया की पढ़ाई के अतिरिक्त सांसारिक ज्ञान प्राप्त करने का भी शौक रखता था। जनरल नॉलेज और शेर-ओ-शायरी का भी बड़ा शौक था इसमें भाग लेता था

अत: कि बेशुमार घटनाएं लोगों ने मुझे लिखी हैं अल्लाह तआला मरहूम के स्तर ऊंचा करे और अपने प्रियजनों के क़दमों में जगह दे। वह बच्चा जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि जामिया पास करने से पहले से ही अच्छा मुरब्बी और उत्कृष्ट मुबल्लिग़ था और ख़िलाफत के लिए अपार सम्मान रखने वाला था। अल्लाह तआला दुनिया के जामियों के सभी छात्रों को यह तौफीक़ प्रदान करे कि वे भी ईमानदारी व बैअत में बढ़ने वाले हों और फर्ज़ों को निभाने वाले हों। उस के दोस्त केवल उस का गुणगान करने वाले न हों बल्कि दोस्ती का हक तो यह है कि उसे अब इस तरह का अदा करें कि उस की विशेषताएं अपना कर अपनी सारी क्षमताएं धर्म की सेवा के लिए उपयोग करें और मुझे भी और अगले आने वाले ख़लीफ़ा को भी हमेशा उत्तम सहायक और सुल्तान नसीर मिलते रहें। अल्लाह तआला माता पिता को भी और भाई बहन को भी दिल का सुकून प्रदान फरमाए और अल्लाह तआला की इच्छा पर खुश रहते हुए, उन लोगों ने जिस धैर्य को व्यक्त किया है उस पर हमेशा यह स्थापित भी रहें और अल्लाह तआला के फज़लों को पाने वाले हों और भविष्य में प्रत्येक परीक्षा और मुश्किल से अल्लाह तआला उन सब को बचाए। नमाज़ के बाद इंशा अल्लाह नमाज़ जनाज़ा होगी। जनाज़ा हाज़िर है। मैं बाहर जाकर नमाज़ जनाज़ा पढ़ाऊंगा। लोग यहीं पंक्तियाँ ठीक कर लें।

☆ ☆ ☆

औलाद का कत्ल मत करो।

अल्लाह तआला पवित्र क़ुर्आन में फरमाता है कि

" और तुम कंगाल होने के डर से अपनी संतान की हत्या मत करो उन्हें भी हम ही रिज़क देते हैं और तुम्हें भी हम ही रिज़क देते हैं। उन की हत्या करना नि:संदेह बहुत बड़ी बात है। (सूर: बनी इस्राईल :33)

व्याख्या

इस आयत की व्याख्या करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो फरमाते हैं कि

"इस भय से कि उन पर पैसा ख़र्च होगा उन की हत्या न करो यह आदेश लड़कियों की हत्या करने के बारे में नहीं है क्योंकि पवित्र क़ुरआन में लड़कियों की हत्या करने का यह कारण नहीं बताया गया कि लोग खर्च के डर से उन्हें क़त्ल कर देते हैं बल्कि यह कारण बताया गया है कि उन के जन्म को अपने लिए शर्मनाक समझते हैं। इस लिए उन को मार डालते हैं इस तरह इस आयत के यह अर्थ भी नहीं हो सकते कि ग़रीबी और तंगी के कारण औलाद की हत्या न करो क्योंकि "इमलाक़" का अर्थ ग़रीबी और तंगी नहीं होता बल्कि इस का अर्थ पैसा खर्च करना है और आयत का अर्थ होगा कि इस डर से न मारो कि पैसा ख़र्च होगा। इस जगह एक प्रश्न होता है कि क्या पैसा खर्च न हो कोई संतान की हत्या करता भी है तो जहां तक दुनिया का तजुर्बा है इस तरह की घटनाएं तो लोग करते नहीं जिन के दिमाग़ सहीह होते हैं। बल्कि हम देखते हैं कि जिन के पास रूपया नहीं भी होता है वे औलाद की हत्या नहीं करते अत: पता चला कि इस हत्या का अर्थ कुछ ओर है और हमें इंसानों में इस जुर्म की तलाश करनी चाहिए। अत: जब हम विभिन्न इंसानों की हालतों को देखते हैं तो हमें पता चलता है कि कुछ लोग कंजूसी के कारण अपनी संतान की उचित तरबियत नहीं करते। पूरा पोषण नहीं देते या ऐसा पोषण नहीं देते जो उस के लिए अति आवश्यक है ऐसे बहुत से लोग हैं जिन के पास पैसे हैं लेकिन बच्चों की तरबियत कंजूसी के कारण अच्छी तरह से नहीं करते उचित कपड़े नहीं देते यहां तक कि कई बार वे उचित पोषण न मिलने के कारण बीमार हो जाते हैं कई बार कपड़ों की कमी के कारण कई बीमारियां लग जाती हैं। इस तरह के लोग संसार में हज़ारों लाखों की संख्या में मिल जाते हैं और प्रत्येक देश में मिलते हैं। इसी तरह हत्या से अभिप्राय अख़लाखी (चारित्रिक) और रूहानी हत्या भी हो सकती है कि पैसों के खर्च के कारण अच्छी शिक्षा नहीं दिलाते और इस तरह बच्चे की चारित्रिक अथवा आध्यात्मिक हत्या का कारण बन जाते हैं।

इस आयत में अल्लाह तआला मोमिनों को आदेश देता है कि ऐसे कार्यों से बचो और वह ख़र्च जो बच्चों के स्वास्थ्य और चारित्रिक स्थितियों को सुधारने के लिए आवश्यक है उन से भागा न करो और हत्या का शब्द इस लिए प्रयोग किया है कि संतान की हत्या से इंसान नफरत करता है। अत: इस शब्द के प्रयोग से उस का ध्यान इस तरफ किया कि तुम किसी करह भी संतान को अपने हाथों से मारने के लिए तय्यार नहीं होते लेकिन यह नहीं सोचते कि एक ओर इस तरह से तुम अपने बच्चों का कत्ल कर रहे हो अर्थात् औलाद के पालन पोषण का ध्यान नहीं रखते और उन के चरित्र को बर्बाद कर देते हो हत्या का शब्द प्रयोग करने में मेरे नज़दीक यह भी कारण है कि अगर केवल इस तरह कहा जाता कि संतान पर ज़रूरी ख़र्च किया करो तो इन शब्दों में उन प्रभावों की ओर संकेत न होता जो संतान के जीवन पर पड़ते हैं. लेकिन इन शब्दों के प्रयोग ने सारे प्रभावों को भी अपने भीतर शामिल कर लिया है। उदाहरणत: पत्नी के आहार में या वस्त्र आदि का ध्यान न रखना दूध पिलाने या गर्भ अवस्था में उस पर काम का बहुत बोझ डालना यह सब एसी बातें है जिस से संतान पर बहुत बुरा प्रभाव होता है। और या तो गर्भ में ही मर जाते हैं या उस की सेहत कमज़ोर रहती है "ला तकतलो" के शब्दों में इन सब बातों की मनाही आ जाती है और यह उद्देश्य दूसरे शब्दों से पूरा न हो सकता था।

इस आयत के यह अर्थ भी हो सकते हैं कि जो कुछ सूफी लोग करते हैं कि औलाद के जन्म को केवल इस ख़तरे से रोकना मना है कि अगर औलाद अधिक हो जाएगी तो फिर खाएगी कहां से इस बात को सामने रखते हुए औलाद के जन्म को रोकना हत्या करना कहलाएगा और औलाद की हत्या प्रत्येक परिस्थितियों में मना है और बुरा है तो अर्थ यह हुआ कि कंगाली के कारण से औलाद की हत्या(अर्थात् उस के जन्म को रोकना) मना है हां कुछ ओर विवश परिस्थितियों में उचित भी हो सकता है उदाहरणत: औरत बीमार हो उस समय उचित होगा कि बच्चे पैदा करने बन्द कर दें(अर्थात कोई ऐसी बीमारी में ग्रस्त हो ठीक न हो सके- अनुवादक) इस के अतिरिक्त जन्म में रोक डालने के जो बच्चा गर्भ में पल चुका हो कुछ परिस्थितियों में उस का मारना भी उचित होगा। उदाहरणत: किसी गर्भवती औरत के बारे में प्रसव के समय संदेह हो कि अगर बच्चे को प्राकृतिक रूप से पैदा कर दिया जाए तो मां की मृत्यु निश्चित रूप से हो जाएगी इस स्थिति में बच्चे को नष्ट कर देना उचित होगा क्योंकि बच्चे के बारे में कह नहीं सकते के कि वहमुर्दा पैदा होगा या ज़िन्दा रहेगा या नहीं परन्तु मां समाज का एक लाभ दायक अंग है। इस लिए संदेहात्मक हानि से विश्वसनीय हानि को अधिक महत्तव दिया जाएगा और बच्चे को गिरा दिया जाएगा।

भावार्थ यह कि "ला तकतलो" (हत्या न करो) के शब्दों को प्रयोग करने के बाद "ख़शयत इमलाक" (कंगाली का डर) की शर्त लगा कर पवित्र क़ुरआन ने औलाद की तरबियत उस के जीवन के मृत्यु के बारे में एक ऐसा विस्तृत विषय वर्णन किया है और उसे संक्षिप्त शब्दों में वर्णन किया है कि इस का उदाहरण दूसरी किसी धार्मिक पुस्तक ने छुआ तक नहीं।

(तफसीर कबीर भाग 4 पृष्ठ 325-327)

☆ ☆ ☆

सबर आधा ईमान है

सबर उन मामलों में से है जो इस्लाम में फर्ज़ हैं। सबर आधा ईमान है। कुरआने करीम ने 80 स्थानों पर इसका ज़िक्र किया है। कहीं इसका हुक्म दिया गया है। ''सबर और नमाज़ से मदद लो।'' (अल बकरा: 45) और कहीं इसकी खिलाफव-र्जी से मना किया गया है, जैसे ''अत: हे नबी! सबर करो जिस तरह रसूलों ने सबर किया है और उनके मामले में जल्दी न करो।'' (अल हिकाफ-35.46) कहीं साबिर के साथ मुहब्बत का इज़हार किया गया है, जैसे -'' अल्लाह तआला साबिरों को पसंद करता है।''(आले इमरान-3.14)

कहीं यह बात की गई है कि अल्लाह तआला साबिर लोगो का साथी है, जैसे "हे लोगो जो ईमान लाए हो, सबर और नमाज से मदद करो।" (अल बकरा:153) कहीं यह बात बताई गई है कि साबिर लोगों का अंजाम भला होगा। जैसे ''अगर तुम सबर करो तो यह तुम्हारे लिए बेहतर है।''(अल निसा 25) कहीं यह ज़िक्र है कि उन लोगों को अज्रे अज़ीम से नवाजा जाएगा। जैसे '' सबर करने वालों को तो उनका अज्र बेहिसाब दिया जाएगा।''(अल ज़ुमर: 39) कहीं यह जिक्र है कि साबिरीन अल्लाह तआला की निशानियों और नसीहतों से लाभ हासिल करते हैं, जैसे ''इन वाक्यात में बड़ी निशानियां है हर उस फर्द के लिए जो सबर और शुक्र करने वाला हो।'' (इब्राहीम-5.14) कहीं यह फरमाया गया है कि यह जन्नत में दाखिल होने का सबब है जैसे -''तुम पर सलामती हो तुमने दुनिया में जिस तरह सबर से काम लिया और उसकी बदौलत आज तुम इसके मुस्तहक हुए हो।'' (अल राद-13.24)

इसके अतिरिक्त सबर व यकीन के साथ अमानत फिद्दीन मयस्सर होता है "और जब उन्होंने सबर किया और हमारी आयतों पर यकीन लाते रहे तो उनके अन्दर हम ने ऐसे पेशवा पैदा किए जो हमारे हुक्म से रहनुमाई करते थे।" (अल सजदा-24.32) यह उन आयतो में से चंद हैं जो कुरआने करीम में सबर के हवाले से वारिद हैं।

सुन्नते नबवी में भी सबर के बारे में बहुत सी हदीसे हैं। उनमें से चंद इस तरह है। ''किसी ने किसी को सबर से ज्यादा बेहतर और इससे कुशादा अतिया नहीं दिया।''

''मोमिन का मामला भी अजीब है। उसके लिए तो खैर ही खैर है। यह चीज मोमिन के सिवा किसी और के हिस्से में नहीं आई। अगर उसे खुशी हासिल होती है तो शुक्र करता है, यह उसके लिए ख़ैर है। और अगर उसे तकलीफ पहुंचती है तो सबर करता है और यह भी उसके लिए खैर है।'' सबर के शाब्दिक अर्थ रोकना और रुक जाने के हैं।

शरीअत की इस्तलाह में सबर की तीन किस्में हैं।

एक अल्लाह तआला की इताअत पर सबर।

दूसरी, अल्लाह की नाफरमानी से सबर

और तीसरी मुसीबत व मुश्किलों पर सबर।

अल्लाह तआला की इताअत पर सबर यह है कि आदमी हमेशा इसकी पाबंदी करे। इसके बारे में अखलाक से काम ले और इसको शरीयत के तकाजों के मुताबिक अंजाम दे। इसमें जो चीज मददगार साबित हो सकती है वह यह है कि आदमी अल्लाह तआला की मारफत हासिल करे और बंदो पर उसके हुकूक को पहचान ले और यह भी मालूम हुआ कि जो लोग अल्लाह तआला की इताअत करते हैं उनको अल्लाह तआला बेहतर बदला फरमाता है।

अल्लाह तआला की नाफरमानी के कामों से सबर यह कि बुराइयों को छोड़

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIN 01885 Vol. 1 Thursday 20 October 2016 Issue No. 33

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

दिया जाए और गुनाहों से दूर रहा जाए और साबिर मुसलसल उनसे दूर रहे और राहे फरार अख्तियार किए रहे। इस सबर की प्राप्ति में जो चीज़ सहायक साबित होती है वह यह है कि अल्लाह तआला का अजाब आदमी के दिल में हर वक्त बाकी रहे।

इस को प्रकट करने का उच्च दर्जा यह है कि इंसान अल्लाह तआला से हया (लज्जा) करे और उसके साथ मुहब्बत रखे। इसके अतिरिक्त सबर के फलों को ध्यान में रखना भी इसमें मददगार साबित हो सकता है। सबर के फलों में एक यह है कि आदमी का ईमान बरकरार रहेगा, उसे दृढ़ता हासिल होगी और उसमें इज़ाफा होगा।

क्योंकि गुनाह या तो ईमान को खत्म कर देते हैं या उसे कमजोर बना देते हैं या उसे गंदा करके उसके नूर और खुशनुमाई को खत्म कर देते हैं।

मुसीबत कठिनाइयों पर सबर इस तरह होता है कि मुश्किलात को बरदाश्त किया जाए, उस पर नाराजगी को तर्क किया जाए और लोगों से कोई शिकवा शिकायत न की जाए। इसलिए कि मख़लूक से शिकायत सबर जमील के मनाफी है। अलबत्ता अल्लाह तआला के यहां शिकवा सबर के मनाफी नहीं है।

अल्लाह तआला ने हजरत याकूब अलैहिस्सलाम के बारे में फरमाया-'' उसने कहा "मैं अपनी परेशानी और अपने गम की फरियाद अल्लाह के सिवा किसी से नहीं करता।'' (यूसुफ 12.86) और हजरत अयूब अलैहिस्सलाम के बारे में फरमाया ''याद करो जब कि उसने अपने रब को पुकारा कि मुझे बीमारी लग गई है और तू रहम करने वाला है।'' (अल अंबिया-21.83) उनके बारे में एक और जगह फरमाया'' हमने उसे साबिर पाया, बेहतरीन बंदा अपने रब की तरफ बहुत रूजूअ करने वाला।''

इसी प्रकार सबर करने वाला अल्लाह तआला की उन नेमतों को देखे जिन का हिसाब और गिनती मुश्किल है। इस तरह मुसीबत वाले के लिए इस मुसीबत को बर्दाश्त करना आसान होता है और उसका बोझ हल्का हो जाता है। इसकी मिसाल ऐसी होती है जैसे एक आदमी को दो हजार रूपए दिए जाएं और उनमें से एक पैसा उससे गुम हो जाए। मुसीबत पर सबर के लिए यह बात मददगार साबित होती है कि आदमी साबिरीन के अजीम अज्र को ज़ेहन में लाए।

☆ ☆ ☆

उपदेश

ख़ुद्दामुल अहमदिया का उद्देश्य

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़

"ख़ुद्दामुल अहमदिया (युवा संगठन) का उद्देश्य या जमाअत अहमदिया अथवा जमाअत की किसी भी ज़ैली संस्था का उद्देश्य ख़ुदा तआला की प्रशंसा प्राप्ति है, स्वयं में तक़्वा पैदा करना है,... हज़रत मुस्लिह मौऊद रज़ि अल्लाह (द्वितीय ख़लीफ़ा) जिन्होंने इन ज़ैली तंज़ीमों को स्थापित किया था जैसा कि मैंने कहा "उन्होंने फरमाया था कि हमारी जमाअत को नेकी, संयम, इबादत, ईमानदारी, सत्य अर्थात् सत्य और न्याय में ऐसी उन्नति करना चाहिए कि न केवल अपने अपितु अन्य भी इस का इक़रार करें । फरमाया - इस उद्देश्य पूर्ति के लिए मैंने "ख़ुद्दामुल अहमदिया" "अन्सारुल्लाह" और "लज्ना इमाउल्लाह"। इन समस्त का उद्देश्य या कर्त्तव्य यह है कि न केवल अपने अन्दर अच्छाई स्थापित करें अपितु दूसरों में भी अच्छाई उत्पन्न करने का प्रयास करें... यदि इस उद्देश्य को पूर्ण करना है जिसे प्राप्त करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अवतरित हुए थे, तो हमें अपने युवाओं में परिवर्तन लाना होगा । युवाओं को अपने अन्दर परिवर्तन पैदा करना होगा, अपने बच्चों में परिवर्तन पैदा करना होगा तथा बच्चों को स्वयं अपने अन्दर परिवर्तन लाना होगा, अपने वृद्धों में परिवर्तन पैदा करना होगा, स्त्रियों में परिवर्तन पैदा करना होगा। हम तब ही इस दावे में सच्चे हो सकते हैं कि हम संसार से अन्याय भी समाप्त करेंगे तथा अत्याचार का भी अन्त करेंगे ।"

(अन्तिम ख़िताब, सालाना इज्तिमा, ख़ुद्दामुल अहमदिया, यू.के., 19 सितम्बर, 2004 ई.)

☆ ☆ ☆

दुनिया धोखा का घर है।

इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाह अलैहि लिखते हैं कि एक राजा था उसका एक बग़ीचा था उसके कई भाग थे। राजा ने एक आदमी को आदेश दिया कि मेरे लिए इस डिब्बे में अच्छे और उत्कृष्ट किस्म के फल लाओ मगर शर्त यह है कि जिस भाग में जाओ और तुम फल पसंद न आए तो फिर उस भाग में न आना। वह आदमी बाग़ के एक हिस्से में गया तो वहां उसे कोई फल पसंद नहीं आया इस तरह वे एक एक करके बाग़ के सभी भागों में गया लेकिन कोई भी फल उसके दिल को न पसन्द आया जब वह अंतिम भाग में पहुंचा तो हैरान हुआ क्योंकि वहाँ कुछ भी न था और शर्त के अनुसार वापस उन भागों में जा नहीं सकता था जहां फल था मजबूर होकर वह खाली टोकरी लेकर राजा के सामने हाज़िर हुआ राजा ने पूछा मेरे लिए क्या लाए हो? उसने कहा कुछ नहीं।

इमाम गज़ाली फरमाते हैं कि बादशाह से मुराद अल्लाह की हस्ती है बाग़ मानव ज़िन्दगी को दर्शाता है और ज़िन्दगी से आदमी के दिन अभिप्राय हैं। टोकरी से मतलब आदमी का कर्मों का लेखा है ..आदमी कहता है कि मैं कल से नेक काम शुरू करूंगा कल से नमाज़ पढ़ूंगा लेकिन कल कल करते एक दिन मौत उसे अपने आगोश में ले लेती है और जो दिन बीत जाए वह वापस नहीं आते। और वह अल्लाह तआला के पास खाली हाथ चला जाता है तो इससे मालूम हुआ कि दुनिया धोखा का घर है।

☆ ☆ ☆

कर्मों में सबसे वज़नदार चीज़ आचरण है।

कहते हैं कि एक दिन शैतान बैठा रस्सियों के फंदे तैयार कर रहा था .. कुछ मोटी मोटी रस्सियों के फंदे थे कुछ बारीक है और कमजोर रस्सियों के फंदे थे .. वहाँ से एक ज्ञानी गुज़रा तो उसने शैतान से पूछा .. " अरे ओ दुश्मन इंसान! यह क्या कर रे हो ..? "

शैतान ने सिर उठा कर देखा और अपना काम जारी रखते हुए बोला .. " देखते नहीं हज़रत, इंसानों को काबू करने के लिए जाल तैयार कर रहा हूं। "

इन हज़रत ने पूछा .. " यह कैसे फंदे कुछ बड़ें कुछ हल्के ..? "

शैतान ने कहा " फंदे उन लोगों के लिए हैं जो शैतान की बातों में नहीं आते .. अत: विभिन्न प्रकार के फंदे तैयार करने पड़ते हैं .. कुछ सुन्दर 'कुछ मोटे' कुछ पतले .. "

इन हज़रत के दिल में जिज्ञासा पैदा हुई। पूछा "क्या मेरे लिए भी कोई फंदा है ..? "

शैतान ने सिर उठा कर मुस्कुराते हुए कहा .."आप ज्ञान वालों के लिए मुझे फंदे तैयार नहीं करने पड़ते .. आप लोगों को तो चुटकियों में घेर लेता हूँ .. ज्ञान का अहंकार ही काफी है आप लोगों को फांसने के लिए .."

इन हज़रत ने हैरान होकर पूछा .. "फिर यह मोटे फंदे किसके लिए हैं ..? "

शैतान ने कहा .. " मोटे फंदे आचरण वालों के लिए हैं जिनके आचार व्यवहार अच्छे हैं .. उन पर काबू पाना मुश्किल होता है।

इसीलिए हदीस में है कि कर्मों में सबसे वज़नदार चीज़ आचरण होगा .. "अल्लाह हम सबको अच्छा आचरण वाला बना दे।

आमीन या रब्बुल आलमीन

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad